सर्व सिद्धिदायक श्री अरनाथ विधान

- संपादक -

ब्र. जय कुमार जैन 'निशांत'

- प्रकाशक -

श्री दि.जैन युवक संघ

सर्वसिद्धिदायक

श्री अरनाथ विधान

सम्पादन
ब्र. जयकुमार जैन 'निशान्त' प्रतिष्ठाचार्य

प्रकाशक

श्री दिगंबर जैन युवक संघ

केंद्रीय कार्यालय : श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर (म.प्र.)
फोन :- 0731-2571851, मो.: 8989505108

- **कृति-सर्वसिद्धिदायक श्री अरनाथ विधान**
- सम्पादक – **ब्र. जयकुमार जैन ''निशान्त''** (प्रबंध सम्पादक-संस्कार सागर, इन्दौर)
- तृतीय आवृत्ति – २०१९
- संस्करण : ३३००

प्रकाशक : **श्री दिगंबर जैन युवक संघ**
केंद्रीय कार्यालय : श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड, इन्दौर (म.प्र.)
फोन :-०७३१-४००३५०६, मो.: ८९८९५०५१०८

प्राप्ति स्थान

१) **श्री दि. जैन पंचबालयति मंदिर**
विद्यासागर नगर, बॉम्बे हॉस्पिटल के पास
ए.बी. रोड, इंदौर (म.प्र.) ०७३१-४००३५०६, मो.: ९३०३१३७०९१

२) **ब्र. जयकुमार 'निशान्त' प्रतिष्ठाचार्य**
पं. गुलाबचन्द्र पुष्प प्रतिष्ठाचार्य स्मृति समिति
पुष्प भवन – टीकमगढ़ (म.प्र.) मो. ९४२५१४१६९७, ७९७४०१०१३४

३) **अरिहंत साहित्य सदन**
४, रेनबो विहार, मेरठ रोड़, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
फोन : ०१३१-२४३३२५७

४) **गजेन्द्र ग्रंथमाला**
२५७८, धर्मपुरा, दिल्ली-६,
मोबाईल : ०९८१००-३५३५६

५) **अमर ग्रंथमाला**
श्री दि. जैन उदासीन आश्रम, एम.जी. रोड़, इन्दौर
फोन : ०९४२५४-७८८४६

न्यौछावर राशि : बीस रुपये मात्र

मुद्रक : **मोदी प्रिन्टर्स,** 76-बी पोलोग्राउण्ड इण्डस्ट-ीयल इस्टेट, पत्रिका प्रेस के पीछे, इंदौर
(मो. 98260-16543)

अनुक्रमणिका

१. **श्री अरनाथ स्तवन**
आचार्यश्री विद्यासागर महाराज

२. **नवागढ़ क्षेत्र पूजा**
आचार्य विभवसागरजी महाराज

३. **श्री नवागढ़ अरनाथ जिन पूजा**
पं. नीरज जैन ''सतना''

४. **श्री अरनाथ जिन पूजा**
आचार्य विशदसागरजी महाराज

५. **श्री अरनाथ जिन पूजा**
कवि वृन्दावनलालजी

६. **श्री अरनाथ भगवान विधान पूजा**
आचार्य विभवसागरजी महाराज

७. **श्री अरनाथ चालीसा**
आचार्य विशदसागरजी महाराज

८. **अतिशय क्षेत्र नवागढ़, वंदनाष्टक**
प्रतिष्ठाचार्य पं. पवन दीवान मुरैना

९. **अरनाथ भगवान की आरती**

१०. **अरनाथ भगवान की आरती**

११. **अरनाथ भगवान की आरती**

प्रकाशकीय

सन् १९५९ में सघन बीहड़ों में बसे नवागढ़ क्षेत्र को प्रकाश में लाने के लिये प्रतिष्ठा पितामह पं. श्री गुलाबचंदजी ''पुष्प'' ने अपने सहयोगियों के साथ जो संकल्प लिया था, वह सफलीभूत होकर प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र के रूप में समूचे भारतवर्ष में स्थापित हो चुका है। अनेक विकास के सोपानों पर चढ़कर जिन संस्कृति का योगदान करता हुआ यह क्षेत्र शीघ्र ही नई ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।

तीर्थ के पुनरोत्थान में कई ऐतिहासिक कार्य हुये हैं। उसमें साहित्य की भी महती भूमिका रही है। नवागढ़ क्षेत्र को साहित्य के धरातल पर लाने हेतु सर्वप्रथम पं. नीरज जैन, सतना ने कलम चलाई और श्री नवागढ़ अरनाथ जिनपूजन की मनोहारी रचना की, निःसंदेह यह अनुपम रचना सिद्ध हुई।

आचार्य विभवसागर जी महाराज ने श्री नवागढ़ क्षेत्र में ३-४ बार प्रवास के दौरान अरनाथ पूजा एवं श्री अरनाथ भगवान विधान पूजा का सुन्दर सृजन किया। यह विधान पूजा भगवत् भक्ति की अनमोल कृति बन पड़ी है।

कविवर वृन्दावनलाल जी की श्री अरनाथ जिन पूजा की रचना पूर्व से ही जन-जन में स्थान बना चुकी है। आचार्य विशदसागरजी महाराज ने श्री अरनाथ जिन पूजा की नवीन रचना की साथ ही साथ अरनाथ चालीसा एवं आरती का सृजन किया।

प्रतिष्ठाचार्य पं. पवन दीवान मुरैना ने भक्ति प्रसून रूप में वंदनाष्टक की रचना की है। इसके अलावा ब्र. जयकुमार निशांत ने नवागढ़ क्षेत्र के अरनाथ स्वामी की आरती की रचनाकर लोगों को झूमने का अवसर प्रदान किया है। श्री अरनाथ स्वामी भक्ति भाव पूर्वक पूजन-स्तुति और आरती करने का मंगल सौभाग्य प्राप्त करने हेतु नवीन कृति सुधि भक्तजनों को समर्पित है।

ब्र. जिनेश मलैया (प्रधान सम्पादक संस्कार सागर)
मंत्री श्री दि. जैन युवक संघ, इन्दौर

श्री अरनाथ स्तवन

आचार्यश्री विद्यासागर महाराज

किसी पुरुष के अल्प गुणों का बढ़ा-चढ़ा कर यश गाना।
जग में बुधजन कविजन कहते स्तुति का यह सब बाना॥
पूज्य बने हो ईश बने हो अगणित गुण के धाम बने।
ऐसी स्थिति में आप कहाँ फिर कैसे स्तुति का काम बने॥१॥

यद्यपि मुनिश्वर की स्तुति करना रवि को दीपक दिखलाना।
तदपि भक्ति वश मचल रहा मन कुछ कहने को अनजाना॥
तथा अल्प भी जो तब यश का भविक यहाँ गुण-गान करें।
शुचितम बनता, क्यों ना हम फिर तव थुति-रस का पान करें॥२॥

चौदह मणियाँ निधियाँ नव भी चक्री तुम थे तुम्हें मिली।
हाथी घोड़े कोटि नारियाँ कुछ कम लाखों तुम्हें वरी॥
मुमुक्षुपन की किन्तु किरण जो तुम में जगमग जभी जगी।
सार्वभौम पदवी भी तुमको जीरण तृण सम सभी लगी॥३॥

सविनय द्वय नयनों से तब मुख छवि को जब अनिमेष लखा।
किन्तु तृप्त वह हुआ नहीं पर लख-लख कर अमरेश थका॥
सहस्र लोचन खोल लिये फिर निजी ऋद्धि से काम लिया।
चकित हुआ तब अंग-अंग का प्रभु दर्शन अभिराम किया॥४॥

मोहरूप रिपु-भूप पाप का बाप ताप का कारक है।
कषाय-मय सेना का चालक चेतन निधि का हारक है॥
समकित-चारित-भेदज्ञान मय कर में खर तर-बार लिया।
किया वार निज मोह-शत्रु पर धीर आपने मार दिया॥५॥

तीन लोक को अपने बल पर जीत विजेता बना हुआ ।
काम समझ यों लोक-ईश मैं व्यर्थ गर्व से तना हुआ ।।
धीर वीर जिन किन्तु आप पर प्रभाव उसका नहीं पड़ा ।
लज्जित होकर शिशु-सा आकर तव चरणों में तभी पड़ा ।।६।।

इस भव में भी पर भव में भी दुःसह दुख की है जननी ।
तृष्णा रूपी नदी भयंकर यह नरकों की वैतरणी ।।
इसका पाना पार कठिन है कई तैरते हार गये ।
वीतराग-मय-ज्ञान-नाव मैं बैठ किन्तु प्रभु पार गये ।।७।।

सदाकाल से काल जगत को रुला रहा था सता रहा ।
जन्म-रोग को मित्र बना कर जीवन अपना बिता रहा ।।
महाकाल विकराल किन्तु प्रभु काल आपने विफल किया ।
कुटिल चाल को छोड़ काल ने सरल चाल में बदल दिया ।।८।।

शस्त्रों, वस्त्रों, पुत्र, कलत्रों, आभरणों से रहित रहा ।
विराग विद्या दया दमन से पूर्ण रूप से सहित रहा ।।
इस विध जो तव रूप मनोहर मौन रूप से बोल रहा ।
धीर ! रहित हो सकल दोष से जीवन ये अनमोल रहा ।।९।।

तव मन की अति प्रखर ज्योतिमा फैल रही चहुँ ओर सही ।
फलतः बाहिर सघन तिमिर सब भगा हुआ हो भार कहीं ।।
इसी तरह निज शुद्धातम के परम विभा से नाश किया ।
मोह-मयी अतिघनी निशा का निज-घर शिव में वास किया ।।१०।।

सकल विश्व का जानन हारा तुममें केवल ज्ञान हुआ ।
समवशरण आदिक अनुपत तन अतिशय आविर्सान हुआ ।।
पुण्य-पाक मय इस अतिशय को भविक जनों ने निरखा हो ।
तव पद में नत क्यों ना होवे दोष गुणन को परखा हो ।।११।।

जिसकी भाषा उस भाषा में उसको समझाती वाणी ।
अमृतमयी है जिनवाणी है ज्ञानी कहते कल्याणी ।।
समवशरण में फैल सभी के कर्ण तृप्त भी है करती ।
सुधा जगत में जिस विध जन-जन को सुख दे दुख हरती ।।१२।।

अनेकान्त तब दृष्टि रही है सत्य तथ्य बुध-मीत रही ।
तथ्य-हीन एकान्त दृष्टि रही है औरों की विपरीत रही ।।
एकान्ती का जो कुछ कहना असत्य भी है उचित नहीं ।
और रहा निज मत का घातक इसीलिए वह मुदित नहीं ।।१३।।

पर मत की कमियों को लखने नेत्र खोलकर जाग रहे ।
निज कमियाँ लख भी नहीं लखते जैसे सोते नाग (हाथी) रहे ।।
निज मत थापित पर मत बाधित करने में भी निर्बल है ।
ताप सह वे नहिं समझ सकेंगे तब मत जो अति निर्मल है ।।१४।।

एकान्ती जन दोष-बीज ही सदा निरन्तर बोते हैं ।
निज मत घातक दोष मिटाने सक्षम नहिं वे होते हैं ।।
अनेकान्त तव मत से चिढ़ते आत्महनक हैं बने हुए ।
अवक्तव्य ही ''तत्त्व सर्वथा''जड़ जन कहते तने हुए ।।१५।

अवक्तव्य वक्तव्य नित्य या अनित्य ही यह वस्तु रही ।
सदसत् या है एक रही या अनेक अथवा वस्तु रही ।
कहें सर्वथा यों नय करते वस्तु-तत्त्व को दूषित हैं ।
पोषित करते किन्तु आपके स्याद् पद से नय भूषित हैं ।।१६।।

प्रमाण द्वारा ज्ञात विषय की सदा अपेक्षा रखता हैं ।
किन्तु सर्वथा नियम रखे बिन वस्तु-भाव को चखता है ।।
ऐसा स्याद् पद पर मत का नहिं तव मत का श्रृंगार रहा ।
अतः 'सर्वथा पद' ही परमत निजमत को संहार रहा ।।१७।।

प्रमाण नय साधन से साधित अनेकान्त-मय तव मत में ।
अनेकान्त भी अनेकान्त है जिसका सेवन अवनत में ।।
पूर्ण वस्तु को विषय बनाते प्रमाण-वश नैकान्त बने ।
वस्तु-धर्म हो एक विवक्षित, नय-वश तब एकान्त तने ।।१८।।

निराबाध और निरुपम शासन के शासक गुण-धारक हो ।
सुखद-योग-गुण-पालन का पथ दिखलाते अघ मारक हो ।।
इन्द्रिय विजयी धर्म तीर्थ के हे अर जिन तुम नायक हो ।
तुम बिन भविजन हितपथ दर्शक, अन्य कौन ? सुखदाय कहो।।१९।।

आगम का भी अल्पज्ञान है पूर्ण ज्ञान वह मिला नहीं ।
मंद बुद्धि मम विशद नहीं है भक्ति-भाव मिला यहीं ।।
मानस-आगम-बल से फिर भी जो कुछ तव गुणगान किया ।
पाप-शमन का हेतु बनेगा वरद ! यही अनुमान लिया ।।२०।।

दोहा

नाम मात्र भी नहिं रखो नाम-काम से काम ।
ललाम आतम में करो विराम आठों याम ।।१।।
नाम धरो अर नाम तव अतः सुमरूँ अविराम ।
अनाम बन शिव-धाम में काम बनूँ कृत-काम ।।२।।

Jhudkx<+ {ks=k iwtk

आचार्य श्री विभवसागर महाराज

अतिशयकारी क्षेत्र नवागढ़, तीर्थ हमारा है।
नदी किनारा, नयनों प्यारा, हृदय दुलारा है।।
अरनाथ भगवान आपका जयकारा गूँजे।
आह्वानम् कर भक्त आपका, प्रभु तुमको पूजे।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ-श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ-श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ-श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहतो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम्।

जल ही जीवन जल-सा शुचि मन, हे जिनवर लाया।
मंगलमय शुभ कलश संजोकर, पूजन को आया।।
अरनाथ भगवान आपको, सादर सिर नाऊँ।
क्षेत्र नवागढ़ की पूजा कर, आत्मशांति पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ-श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु- विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनपद वंदन लाया चंदन, अभिनन्दन कारी।
सेना नंदन तुमको वंदन, भव बंधन हारी।।
अरनाथ भगवान आपको, सादर सिर नाऊँ।
क्षेत्र नवागढ़ की पूजा कर, आत्मशांति पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ-श्रीअरनाथजिनेन्द्राय संसारताप- विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव से तुम हो अक्षत, अक्षय गुणधारी।
अखण्ड अक्षत चढ़ा रहा हूँ, अक्षय पदधारी।।
अरनाथ भगवान आपको, सादर सिर नाऊँ।
क्षेत्र नवागढ़ की पूजा कर, आत्मशांति पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ-श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पराज यह पुष्प मनोहर, पूजा में लाया।
मदन विजेता शिवपथ नेता, के चरणों आया।।
अरनाथ भगवान आपको, सादर सिर नाऊँ।
क्षेत्र नवागढ़ की पूजा कर, आत्मशांति पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाण– विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

राजवैद्य जिनराज आप हो, सब जग रोगी है।
क्षुधा रोग से व्याकुल होकर, बनता भोगी है।।
अरनाथ भगवान आपको, सादर सिर नाऊँ।
क्षेत्र नवागढ़ की पूजा कर, आत्मशांति पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग– विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाया थाल सजाया, आरतियाँ लाया।
हुई दिवाली ले उजियाली, भक्ति भाव आया।।
अरनाथ भगवान आपको, सादर सिर नाऊँ।
क्षेत्र नवागढ़ की पूजा कर, आत्मशांति पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार– विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाऊँ धुआँ उड़ाऊँ, कर्म नशाऊँगा।
इष्ट देव अरिहंत देव को, हृदय बसाऊँगा।।
अरनाथ भगवान आपको, सादर सिर नाऊँ।
क्षेत्र नवागढ़ की पूजा कर, आत्मशांति पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लाया शिवफल भाया, गुण कीर्तन गाया।
जिनपूजा का अपूर्व अवसर, प्रभु मैंने पाया।।

अरनाथ भगवान आपको, सादर सिर नाऊँ।
क्षेत्र नवागढ़ की पूजा कर, आत्मशांति पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन पाऊँ पूजा गाऊँ, क्षेत्र नवागढ़ जी।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति बढ़ाऊँ, क्षेत्र नवागढ़ जी।।
अरनाथ भगवान आपको, सादर सिर नाऊँ।
क्षेत्र नवागढ़ की पूजा कर, आत्मशांति पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू गर्भालय से प्रकटे हो, अरनाथ स्वामी।
कैसे प्रकटे सुनो कहानी, भविजन सुखदानी।।
श्री गुलाब जी पुष्प पितामह, जब नावई आते।
वृक्ष के नीचे पूजने वाले, पूजा को जाते।।

क्या अचरज है? वृद्धजनों ने, कुछ घटना बोली।
खोद निकालूँ प्रतिमा पालूँ, नित रटना होली।
चैत्र मास की तिथि अमावस, दो हजार पंद्रह।
अरनाथ का तब जंगल में, खुला भूमि गर्भगृह।।

सन् उन्नीसौ उनसठ में, अप्रैल आठ जानो।
अरनाथ निर्वाण दिवस पर, प्रभु प्रगटे मानो।।
दर्शन पाए मंगल छाए, जय–जय–जय गूंजा।
अतिशयकारी अरनाथ की, शुरू हुई पूजा।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रो भूगर्भ–स्थिताय चतुर्दश–कामदेव– सप्तम–चक्रेश्वर–अष्टादश–तीर्थेश्वर–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्यावली

गर्वरहित प्रभु गर्भ पधारे, माता सुख पाए।
फागुन शुक्ला तीजा तिथिया, मंगल कहलाए।।
आज गर्भकल्याण मनाऊँ, अरनाथ तेरा।
जिन पूजा से सफल बनेगा, यह नर तन मेरा।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन–शुक्लतृतीयायां गर्भ–मंगल–प्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म प्रदाता अंतिम माता, थी मित्रा देवी।
जन्मजयी ने जन्म लिया है, त्रिभुवनपद सेवी।
आज जन्म कल्याण मनाऊँ, अरनाथ तेरा।
जिन पूजा से सफल बनेगा, यह नर तन मेरा।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ल–चतुर्दश्यां जन्ममंगल–प्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय रोधी बंध विरोधी, संवर पथकारी।
यथाजात मुद्रा के धारी, द्वादश तपधारी।।
आज तपः कल्याण मनाऊँ अरनाथ तेरा।
जिन पूजा से सफल बनेगा यह नर तन मेरा।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ल–दशम्यां तपोमंगल–प्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह नशाया ज्ञान जगाया, समवशरण लागा।
दिव्यध्वनि सुन भव्य जनों को, आत्मबोध जागा।।
आज ज्ञानकल्याण मनाऊँ, अरनाथ तेरा।
जिन पूजा से सफल बनेगा, यह नर तन मेरा।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ल–द्वादश्यां ज्ञानकल्याणक–प्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान लगाये कर्म नशाये, जिनगुण प्रगटाए।
तीर्थराज सम्मेद शिखर से, सिद्धलोक पाए।।
आज मोक्ष कल्याण मनाऊँ, अरनाथ तेरा।
जिन पूजा से सफल बनेगा, यह नरतन मेरा।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण–अमावस्यां निर्वाणकल्याणक–प्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

तीर्थ नवागढ़ क्षेत्र के, अरनाथ भगवान।
पूजा कर जयमाल मैं, करता प्रभु गुणगान।।01।।

भवसागर से तारने, तीरथ तीर्थ समान।
भाव सहित वंदन करूँ, क्षेत्र नवागढ़ आन।।02।।

जो तीर्थवंदना को आता, श्रद्धा से शीश झुकाता है।
वह अपने अन्तर आतम में, सम्यग्दर्शन प्रकटाता है।।
विधि का विधान मिट जाता या, विधि का विधान कट जाता है।
विधि का विधान घट जाता या, विधि का विधान छट जाता है।।03।।

इस द्रव्य तीर्थ के दर्शन से, मन भाव तीर्थ बन जाता है।
मन को प्रसन्नता मिलती है, मन ज्ञान तीर्थ बन जाता है।।
वह शिल्पिकार भी धन्य अहा, जिसने जिनबिम्ब तराशा है।
हो वीतराग सर्वज्ञ आप, गढ़ दी इसमें परिभाषा है।।04।।

जब–जब दर्शन के भाव जगें, बिन अनशन के उपवास फलें।
जब–जब दर्शन के लिए चलें, तब पक्ष–मास उपवास फलें।।
जब जिनमंदिर के आँगन में, जिन दर्शनार्थ नर कदम रखे।
निर्मल भावों के बल पर ही, छह माह फले उपवास सखे।।05।।

जिनमंदिर का द्वारा आया, शुभ भाव सहित आगमन किया।
तब एक बरस के अनशन का, बिन किए सहज फल वरण किया।।
पावन प्रदक्षिणा देकर के, जो अनुपम पुण्य कमाया है।
तब शतक बरस उपवासों का, मैंने अतिशय फल पाया है।।06।।

जब वीतराग जिनमुद्रा को, श्रद्धा से यहाँ निहारा है।
तब सहस बरस उपवासों का, मैंने अद्भुत फल धारा है।।
मुझमें निसर्ग शुचिता जागी, तब भाव सहित गुणगान किया।
पहले पूजाकर ध्यान किया, पीछे वचनामृत पान किया।।07।।

अतिशयकारी तीरथ महान, अनशन अनन्त फल दाता है।
पूजा कर भक्त पुजारी का, जुड़ जाता प्रभु से नाता है।
सौधर्म इन्द्र भी नृत्य करें, ईशान इन्द्र त्रयछत्र धरें।
सुर सनत महेन्द्र धरें चामर, शुभ कृत्य यही कृतकृत्य करें।।08।।

जब इन्द्र जिनालय जाते हैं, तब पूजा वहाँ रचाते हैं।
श्री नंदीश्वर में जाकर के, जिनपूजापर्व मनाते हैं।।
यह क्षेत्र हमारा नंदीश्वर, यह पंचमेरु–सा तीरथ है।
जो क्षेत्र नवागढ़ पर आता, वह भक्त श्रेष्ठ भागीरथ है।।09।।

श्रद्धा संयम का अनुपम गढ़, यह क्षेत्र नवागढ़ कहलाता।
जैनत्व विभव का अनुपम गढ़, यह क्षेत्र नवागढ़ कहलाता।।
कुछ गढ़ा गया निर्ग्रन्थों से, कुछ गढ़ा गया अरिहन्तों से।
इतिहास यहाँ का गढ़ा गया, फिर वीतराग जिनबिम्बों से।।10।।

पत्थर–पत्थर भी बोल रहे, अगणित रहस्य वह खोल रहे।
वे पुरातत्त्व अवशेष शेष, इस तीरथ पर अनमोल रहे।।
आनंदप्रदायी नंदपुरम् फिर नावइ आज नवागढ़ है।
संग्रहालय में आकर देखो, कितना अद्भुत पावन गढ़ है।। 11।।

किन–किनने कितने शिल्प गढ़े, कितने मंदिर थे बनवाए।
हम कैसे ज्ञात करें यह सब, कब संकट बादल मड़राए।।
है मित्र! कल्पनातीत सभी, फिर भी अतीत कुछ कहता है।
प्रतिमा प्रशस्ति में लिखा हुआ, गोलापूरब यह मिलता है।।12।।

कल–कल करती बहती नदियाँ, जो गीत आपके गाती हैं।
गंगाजल लेकर आती हैं, गंधोदक लेकर जाती हैं।।
ये झूम–झूमकर तरुवर भी, जब ताण्डव नृत्य रचाते हैं।
तब दिव्य लोक के देव सभी, आश्चर्य चकित रह जाते हैं।।13।।

कोयल भी यहाँ कुहुकती है, चिड़िया भी मधुर चहकती है।
अपनी–अपनी भाषा बोली, भावों से दिशा महकती है।।
है आम्र वृक्ष की छाँव यहाँ, कूपातिशय सुखकारी है।
हैं नद–नाले सरवर वापी, जो जन–जन को उपकारी हैं।।14।।

मंदिर के उन्नत शिखरों पर, पचरंग ध्वजा लहराते हैं।
रे–रे प्राणी! आओ–आओ! कहकर के हमें बुलाते हैं।।
अम्बर को चूम रहे मंदिर, जो अलंकार अवनितल के।
दर्शन वंदन अर्चन कर लो, रे–रे प्राणीगण! भूतल के।।15।।

जो जन्म–जन्म में पुण्य किया, वह आज उदय में आया है।
अत एव सहज संयोग बना, दुर्लभ दर्शन यह पाया है।।
दर्शन कर पूजा भाव जगें, यह बहुत बड़ी दुर्लभता है।
जिनवर की पूजा कर लेना, जीवन की श्रेष्ठ सफलता है।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला–पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्र नवागढ़ नव्यगढ़, यही भव्यगढ़ जान।
अतिशयकारी दिव्यगढ़, मैं पूजूँ धर ध्यान।।17।।

इत्याशीर्वादः

श्री नवागढ़ अरनाथ जिन पूजा

पं. नीरज जैन, सतना

हे अरनाथ अनाथ के नाथ, सनाथ करहु भवपीर हरीजे
काढ़ि के या भव कानन तें अब, मोक्ष निवास हमें प्रभु दीजे।।
थापत हो कर जोड़ यहाँ, करुणाकर कोर कृपा की करीजे
दीनदयाल दया निधि आय के, दास कौ या दुख दंद हरीजे।।

ॐ ह्रीं अतिशयक्षेत्र–नवागढ़स्थित श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधीकरणम्।

प्रासुक गंगा जल ल्याय, चरणन धार धरो।
भव सागर अति दुखदाय, हे प्रभु पार करो।
जय हे अरनाथ जिनेश, नवागढ़ के स्वामी
मेटो भव–भव के क्लेश, प्रभु अंतर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनदेवाय जन्मजरा–मृत्यु–विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमकुम केशर कर्पूर, मधुर सुगन्ध रचों।
कीजे भव आतप दूर, चन्दन सों चरचों ।। जय0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनदेवाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धर मन में परम उछाह, जे तन्दुल बीने।
कर अक्षय पद की चाह, चरणन धर दीने ।। जय0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अति सुन्दर सुरभि निकेत, चम्पादिक लायो।
मन्मथ मद मर्दन हेतु, प्रभु तुम ढिंग आयो ।। जय0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनदेवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चुन चुन लायो तुम पास, घेवर अरु खाजा।
प्रभु कीजे क्षुध विनाश, त्रिभुवन के राजा ।। जय0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय लघु कंचन दीप, जग मग ल्याय धरो।
हे अनुपम ज्ञान–प्रदीप भ्रम तम वेगि हरो ।। जय0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनदेवाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागरु अरु घनसार, चूरण करि खेऊँ ।
प्रभु अष्ट कर्म कर क्षार, पंचम गति लेऊँ ।। जय0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनदेवाय दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल कदली आम, चुन लायो पल में।
चाहत हों हे गुण धाम, मोक्ष महाफल मैं ।। जय0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनदेवाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल–चन्दन–अक्षत–फूल–नेवज–दीप धरा।
दस गंध सुगंधि दुकूल, फल लै अर्घ करा ।। जय0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

पंचकल्याणक अर्घ्य

फागुन की सुदी तीज महान्, मित्रा देवी गरभ में आन।
धनपति आय रतन वरषाय, अष्ट देवियाँ मंगल गाय।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन शुक्ल चतुर्दशी पाय, हथनापुर जब जनम सुपाय।
इन्द्र सुमेरू पर ले जाय, हम इत पूजें मन वच काय।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।2।

संयम बिन नहीं हो कल्याण, मगसिर सित दशमी दिन जान।
अपराजित घर करें अहार, हम पूजें नित सुरत संभार।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लदशम्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।3।

कार्तिक शुक्ल द्वादशी आई, केवलज्ञान भयो जिनराई।
समवशरण तिष्ठे जिनराज, हम पूजें नित धरम जहाज।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

चैत्र कृष्ण अम्मावसि आय, शिखरसम्मेद में ध्यान लगाय।
पायो निश्चल पद भगवान, चरण जजें हम कर गुणगान ।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।5।

जयमाला

श्री अरनाथ जिनेश के, चरण कमल सिर नाय।
अतिशय गुण जय मालिका, वरणत चित्त लगाय।

(पद्धरि छन्द)

जय जय जिनवर जय जय जिनेन्द्र,
पूजत चरणाम्बुज सुर महेन्द्र।
जय राय सुदर्शन सुत महान्,
जय मित्रा नन्दन सुमति थान।

जय जग जीवन के हरत क्लेश।
जय नाथ नवागढ़ के जिनेश।।
जो जन तुव पूजन करत नित्य।
भवसिंधु लांघ शिव पाय सत्य।।

गणधर न सके तुव अन्त पाय।
मैं अल्पबुद्धि किम सकत गाय।।
तुव चरणोदक जो शीश लाय।
भव रोग एक छिन में नशाय।।

यदि तुच्छ रोग छूटें जिनेश।
आश्चर्य कौन इसमें विशेष ।।
जो अनुरागे तव पूजनादि।
निरबरै मोह मदिरा अनादि।।

आश्चर्य कौन तव भक्त लोग।
मेटें पागलपन आदि रोग।।
मैं पूजत तुव चरणारविन्द।
मुझको विजयी कीजे जिनेन्द्र।।

मेरे बैरी मद मोह मान।
इनसे बच पाऊँ अचल थान।।
भव सागर तारण तरण देव।
जय मोह महातम हरण एव।।

जब लौं न तरों भवसिंधु नाथ ।
भव–भव पाऊँ तुव चरण साथ।।

(घत्तानंद छंद)

अरनाथ जिनेशं, हर भव क्लेशं, तुमहिं सुरेशं ध्यावत हैं।
जे वन्दन आवें, भक्ति बढ़ावें, 'नीरज' ते फल, पावत हैं।।

ॐ ह्रीं नवागढ़स्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जयमाला अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौरव गाथा

सन् १९५९ में पं. गुलाबचन्द्र पुष्प एवं उनके साथियों ने नवागढ़ (नावइ) प्राचीन नंदपुर में भगवान अरनाथ स्वामी के अतिशय क्षेत्र का अन्वेषण किया। १९६० में पं. नीरज जैन (सतना) नवागढ़ दर्शनार्थ आये। भगवान अरनाथ स्वामी से इतने आह्लादित हुए कि यहाँ ३-४ दिन रुक कर इस पूजन कर अपनी भावना प्रगट की। आज हमें उनके भावों से परिपूर्ण इस पूजन का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

Jh vjukFk ftu iwtk

आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

अरनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्र! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(छन्द–भुजंग प्रयात)

प्रभो ! नीर निर्मल ये प्रासुक कराके।
चढ़ाने को लाए हैं कलशा भराके।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! गंध केसर घिसा के हम लाए।
भवताप के नाश हेतु हम आए।।प्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

परम थाल तन्दुल के हमने भराए।
विशद भाव अक्षय सुपद के बनाए।।प्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अक्षतपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सलौने सुगन्धित खिले फूल लाए।
प्रभो ! काम बाधा नशाने को आए।।प्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य हमने सरस ये बनाए।
क्षुधा रोग के नाश हेतु चढ़ाए।।प्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! दीप घृत के मनोहर जलाए।
महामोह तम नाश करने को आए।।प्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! धूप हमने दशांगी जलाई।
सुधी नाश कर्मों की मन में जगाई।।प्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! श्रेष्ठ ताजे सरस फल मँगाए ।
महामोक्ष फल प्राप्त करने को आए।।प्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिलाके सभी द्रव्य का अर्घ्य लाए।
परम श्रेष्ठ शाश्वत सुपद पाने आए।।प्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

फाल्गुन शुक्ला तीज को, अरहनाथ भगवान।
मात मित्रसेना वती, उर अवतारे आन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल–तृतीयायां गर्भकल्याणक–प्राप्ताय श्री अरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

अगहन शुक्ला चतुर्दशी को, भूप सुदर्शन के दरबार।
हस्तिनापुर अरनाथ जी, जन्म लिए हैं मंगलकार।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हो हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ल–चतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

अगहन सुदी दशमी जिनराज, धारे प्रभु संयम का ताज।
भेष दिगम्बर धारे नाथ, जिनके चरण झुकाऊँ माथ।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ल–दशम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

द्वादशी कार्तिक सुदी की, कर्म नाशे चार हैं।
जिन अर तीर्थेश ज्ञानी, हुए मंगलकार हैं।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं कार्तिक–शुक्ल द्वादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण की तिथि अमावस, गिरि सम्मेदशिखर शुभ धाम।
अरनाथ जिन मोक्ष पधारे, तिनके चरणन करूँ प्रणाम।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम पथगामी।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **जयमाला गाते परम, भाव सहित हे नाथ!**
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

(छन्द टप्पा)

काम देव चक्री पद पाया, बने मोक्ष गामी।
तीर्थंकर की पदवी पाए, अरनाथ स्वामी।।
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर...।।

फाल्गुन कृष्ण तीज अवतारे, हस्तिनापुर स्वामी।
मात सुमित्रा के उर आए, अपराजित गामी।।
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर...।।
मगसिर शुक्ला चौदस तिथि को, जन्म लिए स्वामी।
इन्द्रों ने अभिषेक कराया, जिनवर का नामी।।
जिनेश्वर हैं ...तीन योग...।
चैत्र कृष्ण की तिथि अमावस, बने मोक्ष गामी।
अक्षय अनुपम सुख पाए तब, शिवपुर के स्वामी।।
जिनेश्वर हैं ...तीन योग...।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ति, पाए जिन स्वामी।
सिद्ध शुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्ध बने नामी।।
जिनेश्वर हैं ...तीन योग...।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पावें स्वामी।
रत्नत्रय को पाकर हम भी, बनें मोक्षगामी।।
जिनेश्वर हैं ...तीन योग...।
संयम त्याग तपस्या करना, कठिन रहा स्वामी।
फिर भी हमने लक्ष्य बनाया, बन के अनुगामी।।
जिनेश्वर हैं ...तीन योग...।

(छन्द घत्तानन्द)

जय–जय हितकारी, संयमधारी, गुण अनन्त के अधिकारी।
तुम हो अविकारी, ज्ञान पुजारी, सिद्ध सनातन अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला–पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **अरनाथ के साथ में, हुए जीव कई सिद्ध।**
सिद्ध दशा हमको मिले, जो है जगत् प्रसिद्ध।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री अरनाथ जिनपूजा

कविवर वृंदावन लाल जी

(छंद छप्पय)

तप तुरंग असवार धार, तारन विवेक कर।
ध्यान शुकल असि धार, शुद्ध सुविचार सुबखतर।
भावन सेना धरम, दशों सेनापति थापे।
रतन तीन धारि सकति मंत्रि अनुभो निरमापे।
सत्तातल सोहं सुभट धुनि, त्याग केतु शत अग्र धरि।
इहविध समाज सज राज को अरजिन जीते करम अरि।1।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक (छंद–त्रिभंगी)

कन मनिमय झारी, दृग सुखकारी, सुर सरितारी नीर भरी।
मुनि मन सम उज्ज्वल, जनम जरा दल, सोलैं पदतल, धारकरी।
प्रभु दीनदयालं, अरिकुल कालं, विरद विशालं, सुकुमालं।
हरि मम जंजालं, हे जगपालं, अरगुनमालं, वरमालं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव ताप नशावन, विरद सुपावन, सुनि मनभावन, मोद भयो।
तातैं घसि बावन, चंदन पावन, तुमहिं चढ़ावन, उमगि अयो।। प्रभु0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अनियारे, श्वेत संवारे, शशिदुति टारे, थार भरे।
पद अखय सुदाता, जग विख्याता, लखि भवताता पुंज धरे।। प्रभु0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुर तरु के शोभित, सुरन मनोभित, सुमन अछोभित ले आयो।
मनमथ के छेदन, आप अवेदन, लखि निरवेदन गुनगायो।।प्रभु0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज सज भक्षक प्रासुक अक्षक, पक्षक रक्षक स्वच्छ धरी।
तुम करमनिकक्षक, भस्मक लक्षक, दक्षक पक्षक रक्षकरी।।प्रभु0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम भ्रमतमभंजन मुनिमनकंजन, रंजन गंजन मोहनिशा।
रविकेवलस्वामी, दीपजगामी, तुमढिंग आमी पुण्यदृशा।।प्रभु0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधूप सुरंगी गंध अभंगी वह्नि वरंगी माहिं ह्वै।
वसुकर्म जरावै धूम उड़ावै, तांडव भावै नृत्य पवै।। प्रभु0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रितुफल अतिपावन, नयनसुहावन, रसनाभावन, कर लीनें।
तुम–विघनविदारक, शिवफलदायक, भवदधि तारक, चरचीनें।। प्रभु0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचि स्वच्छ पटीरं, गंधगहीरं, तंदुलशीरं, पुष्प चरुँ।
वर दीपं धूपं, आनंदरूपं, लै फल भूपं, अर्घ करुँ ।।प्रभु0।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

छंद चौपाई (मात्रा 16)

फागुन सुदी तीज सुखदाई, गरभ सुमंगल ता दिन पाई।
मित्रादेवी उदर सु आए, जजै इन्द्र हम पूजन आए।। 1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

मगसिर शुक्लचतुर्दशि सोहै, गजपुर जनम भयो जग मोहै।
सुर गुरु जजै मेरुपुर जाई, हम इत पूजैं मनवचकाई।।2।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।2।

मगसिर सित दशमी दिन राजै, तादिन संजम धरे विराजै।
अपराजित घर भोजन पाई, हम पूजैं इत चित हरषाई।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लदशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

कार्तिक सित द्वादसि अरि चूरे, केवलज्ञान भयो गुन पूरे।
समवसरन थिति धरम बखाने, जजत चरन हम पातक भाने।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

चैत कृष्ण अमावसी सब कर्म, नाशि वास किए शिवथल पर्म।
निहचल गुन अनंत भंडारी, जजौं देव सुधि लहु हमारी।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।5।

जयमाला

बाहर भीतर के जिते, जाहर अर दुखदाय।
ता हर कर अरजिन भए, साहर शिवपुर राय।। 1।।

राय सुदरशन जासु पितु, मित्रादेवी माय।
हेमवरन तन वरष वर, नव्वै सहस सुआय।। 2।।

छन्द–त्रोटक

जय श्रीधर श्रीकर श्रीपति जी, जय श्रीवर श्रीभर श्रीमतिजी।
भवभीमभवोदधि तारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।3।।

गरभादिक मंगल सार धरे, जग जीवन के दुखदंद हरे।
कुरुवंशशिखामणि तारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।4।।

करि राज छ खंड विभूति मई, तप धरत केवलबोध ठई।
गण तीस जहाँ भ्रमवारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।5।।

भविजीवनि को उपदेश दियो, शिवहेत सबै जन धारि लियो।
जग के सब संकट टारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।6।।

कहि बीस प्ररूपन सार तहाँ, निजशर्म सुधारस धार जहाँ।
गति चार हृषीपन धारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।7।।

षट्काय तिजोग तिवेद मथा, पनवीस कषा वसुज्ञान तथा।
सुर संजमभेद पसारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।8।।

रस दर्शन लेश्या भव्य जुगं, षट् सम्यक् सैनिय भेद युगं।
जुग हार तथा सु अहारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।9।।

गुनथान चतुर्दस मारगना, उपयोग दुवादश भेद भना।
इमि बीस विभेद उचारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।10।।

इन आदि समस्त बखान कियो, भवि जीवन ने उर धार लियो।
कितने शिववादिन धारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।11।।

फिर आप अघाति विनाश सबै, शिवधाम विषैं थितकीन तबै।
कृतकृत्य प्रभू जगतारन हैं, अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।12।।

अब दीनदयाल दया करिए, मम कर्म कलंक सबै हरिए।
तुमरे गुनको कछु पार न है, अरनाथ नमों सुखकारन हैं।।13।।

छन्द घत्तानन्द

जय श्रीअरदेवं, सुरकृतसेवं, समता मेवं, दातारं।
अरिकर्म विदारन, शिवसुखकारन, जयजिनवर जगत्रातारं।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

छन्द–आर्या

अरजिनके पदसारं, जो पूजै द्रव्यभाव सों प्रानी।
सो पावै भवपारं, अजरामर मोच्छथान सुखखानी।।15।।

इत्याशीर्वादः (परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

प्रागैतिहासिक साक्ष्य

नवागढ़ के पश्चिम में ३ कि.मी. दूर फाईटोन पहाड़ी के पास जैन पहाड़ी पर ब्र. जयकुमार जैन निशांत भैया जी द्वारा ६ अक्टूबर २०१४ अन्वेषित गुफाओं में ८ हजार वर्ष प्राचीन रॉक पेन्टिंग, २ हजार वर्ष प्राचीन उत्कीर्ण कायोत्सर्ग मुद्रा एवं चरण नवागढ़ में प्राचीन काल से संतों की साधना स्थली के दर्शन कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

श्री अरनाथ भगवान विधान–पूजा

आचार्य श्री विभवसागर महाराज

नाथ! विधाता आप हो, रचते स्वयं विधान।
विधि पूर्वक पूजा करूँ, अरनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–चतुर्दश–कामदेव सप्तमचक्रेश–अष्टादशतीर्थंकर श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–चतुर्दश–कामदेव सप्तमचक्रेश–अष्टादशतीर्थंकर श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–चतुर्दश–कामदेव सप्तमचक्रेश–अष्टादशतीर्थंकर श्री अरनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव–भव– वषट् सन्निधीकरणम्।

जल से उज्ज्वल आप हो, उज्ज्वल केवलज्ञान।
नमूँ नवागढ़ क्षेत्र के, अरनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु– विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन से शीतल दिया, दिव्यध्वनि का दान।
नमूँ नवागढ़ क्षेत्र के, अरनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय संसारताप– विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत सम अक्षयगुणी, हे अक्षय भगवान।
नमूँ नवागढ़ क्षेत्र के, अरनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त भ्रमर जिनपद करें, भक्ति सुधा रसपान।
नमूँ नवागढ़ क्षेत्र के, अरनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाण– विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

परम वैद्य! नैवेद्य यह, रसना रस की खान।
नमूँ नवागढ़ क्षेत्र के, अरनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग– विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेल धुआँ बाती रहित, अपर दीप जिनज्ञान।
नमूँ नवागढ़ क्षेत्र के, अरनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार– विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मन विकार सब जल गए, धूप जला श्रीमान्।
नमूँ नवागढ़ क्षेत्र के, अरनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन श्रीफल आप हो, देते शिवफल दान।
नमूँ नवागढ़ क्षेत्र के, अरनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनर्घ्य हैं आपके, हो अनंत गुणधाम।
नमूँ नवागढ़ क्षेत्र के, अरनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वलय पूजा

शुभ अतिशय चौतीस युत, प्रातिहार्य प्रभु! आठ।
नंत चतुष्टय शोभते, गुण छियालसों पाठ।।
हो अयोग जिन केवली, सिद्ध हुए भगवान।
यन्त्र बना अर्चन करूँ, दे पुष्पांजलि दान।।

(अथ श्रीअरनाथविधानमण्डलस्य प्रथमवलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

तीन ज्ञान रूपी किरणों से, प्रभुवर शोभ रहे।
बाल सूर्य–सा रूप मनोहर, जन–मन मोह रहे।।
जन्मकाल से ऐसा अतिशय, प्रभुवर ने पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।1।।

ॐ ह्रीं अतिशयरूपधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों मलयागिरी चंदन महके, त्यों प्रभु तन महके।
ललना महके पलना महके, अँगना भी महके।।
जन्मकाल से ऐसा अतिशय, प्रभुवर ने पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।2।।

ॐ ह्रीं सुगन्धिततन–अतिशय–धारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व जन्म में श्रमण आप थे, श्रम परिपूर्ण किया।
स्वेद बहाया खेद न आया, अतिशय आज लिया।।
जन्मकाल से ऐसा अतिशय, प्रभुवर ने पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।3।।

ॐ ह्रीं अस्वेदतन–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मलता इतनी पाई मल–मूत्र नहीं करते।
आत्मशक्ति से शोषित होता, रोध नहीं करते।।
जन्मकाल से ऐसा अतिशय, प्रभुवर ने पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।4।।

ॐ ह्रीं अमल–अमूत्रदेह–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम प्रभावक हितमित भाषा, मधुर वचन बोलें।
जग जीवों की कर्णांजलि में, मिश्री रस घोलें।
जन्मकाल से ऐसा अतिशय, प्रभुवर ने पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।5।।

ॐ ह्रीं हितमितप्रियवाक्–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मजात शिशु जलधारा में, कहीं न बह जाए?
इन्द्रराज को छींक मात्रा से, निज बल बतलाए।।
जन्मकाल से ऐसा अतिशय, प्रभुवर ने पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।6।।

ॐ ह्रीं अतुल्यबल–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत रक्त कणिकाएँ होती, रक्त धवल ऐसा।
वात्सल्य का श्रेष्ठ उदाहरण, और कहाँ कैसा?
जन्मकाल से ऐसा अतिशय, प्रभुवर ने पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।7।।

ॐ ह्रीं धवलरक्तयुक्त–अतिशयधारकाय श्री अरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने लक्षण अपने में हैं, तन पर भी सोहें।
एक हजार आठ शुभ लक्षण, स्वर–व्यंजन जो हैं।।
जन्मकाल से ऐसा अतिशय, प्रभुवर ने पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।8।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्टलक्षणसम्पन्न–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितना जैसा अंग चाहिए, उतना वैसा है।
समचतुरस संस्थान प्रभु का, प्रभुवर जैसा है।।
जन्मकाल से ऐसा अतिशय, प्रभुवर ने पाया।
अतिशयकारी अरनाथ ही, पूजा को आया।।9।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थान–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र वृषभ नाराच संहनन, धारक प्रभु मेरे।
आत्मशक्ति से करें तपस्या, कटें कर्म फेरे।।
जन्मकाल से ऐसा अतिशय, प्रभुवर ने पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।10।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननयुक्त – अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जन्मातिशय पूजन करके, जनम रोग हो दूर।
तीर्थंकर की शरण में आके, मिले शांति भरपूर।।
जन्मकाल से ऐसा अतिशय, प्रभुवर ने पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।11।।

ॐ ह्रीं जन्मातिशय– धारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय पूजा

कर्म घातिया नाशकर, पाया पद अरिहंत।
केवलज्ञानी आपके, दस अतिशय जयवंत।।
सौ इंद्रों से वंद्य हो, विश्ववंद्य भगवान।
पूजा करता आपकी, मंगल भाव महान।।12।।

(अथ श्रीअरनाथविधानमण्डलस्य द्वितीयवलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

सौ–सौ योजन सुभिक्ष फैला, तीर्थंकर स्वामी!
क्षेम कुशल छा गया जगत में, हे केवलज्ञानी!
केवलज्ञान समय से प्रभु ने, यह अतिशय पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।13।।

ॐ ह्रीं शतयोजनसुभिक्ष–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम दिगम्बर शाश्वत सुन्दर, नभ मण्डल गामी।
भुवनत्रय को पावन करते, दिव्यध्वनि दानी।।
केवलज्ञान समय से प्रभु ने, यह अतिशय पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।14।।

ॐ ह्रीं गगनगमन–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में चतुर्दिशा में, चतुर्मुखी सोहें।
सभासदों को दें प्रसन्नता, आप एक जो हैं।।
केवलज्ञान समय से प्रभु ने, यह अतिशय पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।15।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखशोभातिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सन्निधि का चमत्कार यह क्या आश्चर्य हुआ?
शेर गाय इक साथ विराजे, मैत्री पर्व हुआ।।
केवलज्ञान समय से प्रभु ने, यह अतिशय पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।16।।

ॐ ह्रीं परम–अहिंसा धर्मप्रतिष्ठाकारक सर्वजनमैत्री – महाअतिशय– धारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर शुभनाम कर्म की, प्रकृति उदय आई।
नाथ कभी उपसर्ग न होता, यह महिमा पाई।।
केवलज्ञान समय से प्रभु ने, यह अतिशय पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।17।

ॐ ह्रीं सर्वोपसर्गरहित – परम – अतिशयधारकाय श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं केवली कवलाहारी, बल अनंतधारी।
बिन भोजन के सहज तृप्त हैं, मोह नाशकारी।।
केवलज्ञान समय से प्रभु ने, यह अतिशय पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।18।।

ॐ ह्रीं कवलाहाररहित–परम–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथ– जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ विश्वविद्यालय तुम हो, सब विद्याधारी।
सब भाषाविद् भाषापति हे, त्रय जग उपकारी।।
केवलज्ञान समय से प्रभु ने, यह अतिशय पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।19।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्यापति–ज्ञानातिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नख नहीं बढ़ते, केश न बढ़ते, यह अतिशय धारा।
परमौदारिक रूप आपका, सब जग से न्यारा।।
केवलज्ञान समय से प्रभु ने, यह अतिशय पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।20।।

ॐ ह्रीं नखकेशवृद्धिरहित – श्रेष्ठ – अतिशयधारकाय श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पलक न झपके नीर न टपके, अपलक प्रभु मेरे।
अपलक नयनों सदा निहारें, भक्त सदा तेरे।।
केवलज्ञान समय से प्रभु ने, यह अतिशय पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।21।।

ॐ ह्रीं अपलकनयन–शुभ–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फटिक मूर्ति–सी काया प्रभु की, पड़े नहीं छाया।
रूप सुहाना सबको भाया, सब जग हरषाया।।
केवलज्ञान समय से प्रभु ने, यह अतिशय पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।22।।

ॐ ह्रीं छायारहित–शुभ–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

केवलज्ञान के अतिशय पूजें, अतिशय ज्ञान बढ़े।
तुच्छ संयमी जीव भी देखो, मोक्ष की सीढ़ी चढ़े।।
केवलज्ञान समय से प्रभु ने, यह अतिशय पाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।23।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानातिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय पूजा

समवसरण में राजते, पाकर केवलज्ञान।
भवि जीवों को बोधते, करने स्वकल्याण।।

चौदह अतिशय देवकृत, करते हैं यशगान।
पुष्पांजलि क्षेपण करें, कर संकल्प महान।।।।24।।

(अथ श्री अरनाथविधानमण्डलस्य तृतीयवलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

अर्द्धमागधी भाषा होती, अमृत–सी प्याली।
सुनने की अभिलाषा होती, सुनकर दीवाली।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।25।।

ॐ ह्रीं अर्धमागधीभाषाप्रदायक – दिव्य – अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ सर्प की छाँव में देखो, मेंढक सुख पाए।
और सिंहनी गोवत्सों को, दूध पिला जाए।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।26।।

ॐ ह्रीं पारस्परिकमित्रता – दिव्य – अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं समाई अपने भीतर, सो बाहर आई।
सर्व दिशाओं में निर्मलता, निर्मलता छाई।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।27।।

ॐ ह्रीं सर्वदिक्षुनिर्मलता – दिव्य – अतिशयधारकाय श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन की निर्मलता ने देखो, नभ निर्मल कीना।
मानों अपने स्वच्छ गुणों से, अम्बर भर दीना।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।28।।

ॐ ह्रीं नभोनिर्मलता – दिव्य – अतिशयधारकाय श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्यधरा भारत भूतल पर, सब मौसम आते।
स्वयं देवगण षट् ऋतुओं के, शुभ संगम लाते।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।29।।

ॐ ह्रीं षट्–ऋतु – पुष्पफलादि – आगमनप्रकृति – रम्यकारक – दिव्य–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतल समतल हुआ काँच सम, स्वच्छ सरल सीधा।
धर्म राह पर चलते आओ सुनो राम! सीता।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।30।।

ॐ ह्रीं काँचसमपृथ्वीतल–दिव्य–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीवों को पावन पथ की, पुण्य प्रेरणा दी।
कारण पदतल स्वर्ण कमल की, सुरगण रचना की।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।31।।

ॐ ह्रीं चरणकमलतल–स्वर्णकमलरचित–दिव्य–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति कर्म पर जय पाई सो, यह अधिकार हुआ।
देवों द्वारा नभमण्डल में, जय–जयकार हुआ।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।32।।

ॐ ह्रीं नभोमण्डले जयघोष – दिव्य – अतिशयधारकाय श्रीअरनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंद सुगंधित पवन चली यह, प्रभु का तन छूके।
गीत सुनाती आम्र वृक्ष पर, कोयलिया कूके।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।33।।

ॐ ह्रीं मंद–सुगंधित–पवन–प्रवाह – दिव्य – अतिशयधारकाय श्री अरनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल–शीतल मन्द मरुत युत, गन्धोदक वर्षा।
तन–मन को छू लिया उसी ने, रोम–रोम हर्षा।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।34।।

ॐ ह्रीं गंधोदकवृष्टि–दिव्य–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण पथ निष्कंटक है, बढ़ते आओ जी!।
समझो! मोक्षमहल की सीढ़ी, चढ़ते आओ जी!।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।35।।

ॐ ह्रीं निष्कंटकपथ–दिव्य–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी भए प्रभो जी, परमानंद हुआ।
सुनो–सुनो शुभ समाचार सुन, जगदानंद हुआ।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।36।।

ॐ ह्रीं सर्वजग–परमानंद–दिव्य–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र आगे चलता है, हो विहार बेला।
तीर्थंकर का लगा हुआ, समवशरण मेला।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।37।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रसाम्राज्ययुक्त–दिव्य–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल–मंगल द्रव्य लिए हैं, देव–देवियाँ भी।
नाचें–गाएँ हर्ष मनाएँ, सुरगण शचियाँ भी।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।38।।

ॐ ह्रीं प्रशस्तभावकारक–अष्टमंगलद्रव्य–दिव्य–अतिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

देव नमें देवाधिदेव को, अतिशयभाव लिये।
एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक, प्रमुदित आज हुये।।
देव रचित अतिशय कहलाता, यह मंगलकारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।39।।

ॐ ह्रीं देवातिशयधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थवलय पूजा

प्रातिहार्य अर्हन्त के, देते सम्यक् बोध।
आश्रय पाकर भविकजन, करते आतम शोध।।
छत्र चंवर ओ दुंदुभि, शोभित हैं चहुँ ओर।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, पाने जग का छोर।।40।।

(अथ श्रीअरनाथविधानमण्डलस्य चतुर्थवलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जिस तरुवर की छाँव विराजे, शोक रहित कीना।
जिसके मन मंदिर में राजे, सब दुख हर लीना।।
इन्द्र स्वयं सेवा में आए, प्रातिहार्य धारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।41।।

ॐ ह्रीं अशोकतरुसत्प्रातिहार्य–मण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर–सुन्दर परम सुगन्धित, फूलों की वर्षा।
समवशरण में नभ से करते, सुरगण मन हर्षा।।

इन्द्र स्वयं सेवा में आए, प्रातिहार्य धारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।42।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि–सत्प्रातिहार्य–मण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर दुन्दुभियाँ बुला रही हैं, आओ–आओ रे!
मुक्तिपुरी के रथ में बैठो, शिवपुर जाओ रे।।
इन्द्र स्वयं सेवा में आए, प्रातिहार्य धारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।43।।

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभि–सत्प्रातिहार्य–मण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं सिंह का आसन कोई, नहीं सवारी है।
कमलासन ने सिंहासन की, उपमाधारी है।।
इन्द्र स्वयं सेवा में आए, प्रातिहार्य धारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी ।।44।।

ॐ ह्रीं सिंहासन–सत्प्रातिहार्य–मण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के स्वामी तुम हो, छत्र त्रय बोलें।
छत्र त्रय ही रत्नत्रय का, शुभ रहस्य खोलें।
इन्द्र स्वयं सेवा में आए, प्रातिहार्य धारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।45।।

ॐ ह्रीं छत्र–त्रय–सत्प्रातिहार्य–मण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौसठ चंचल चारु चमर चल, चमके चिद् प्यारे।
नीचे झुककर ऊपर उठते, विनय पाठ धारे।।
इन्द्र स्वयं सेवा में आए, प्रातिहार्य धारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।46।।

ॐ ह्रीं चामरोज्ज्वल–सत्प्रातिहार्य–मण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की दिव्यदेशना, त्रिभुवन सुखदानी।
समवशरण में सुनने आते, सब जग के प्राणी।।
इन्द्र स्वयं सेवा में आए, प्रातिहार्य धारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।47।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि–सत्प्रातिहार्य–मण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आभामण्डल में आते ही, वह विशुद्धि आती।
अपने–अपने भव को जानो, प्रज्ञा बढ़ जाती।।
इन्द्र स्वयं सेवा में आए, प्रातिहार्य धारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।48।।

ॐ ह्रीं भामण्डल – सत्प्रातिहार्य – मण्डिताय श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

प्रातिहार्य हैं मंगलकारी, शुभमंगल करते।
सम्यग्दृष्टि जीव सदा ही, अशुभ करम नशते ।।
इन्द्र स्वयं सेवा में आए, प्रातिहार्य धारी।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा सुखकारी।।49।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य – मण्डिताय श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम–वलय पूजा

नंत चतुष्टय आपके, मंगलमय उत्कर्ष।
पुष्पांजलि कर पूजते धर निज उर में हर्ष।।50।।

(अथ श्रीअरनाथविधानमण्डलस्य पंचमवलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सर्वद्रव्य के सर्व गुणों को, सब पर्यायों को।
उत्पादों को व्ययभावों को, सत् ध्रुव भावों को।।
एक साथ सब जान रहे हैं, जड़–चेतन न्यारे।
केवलज्ञान कला के धारी, मेरे प्रभु प्यारे।

कर्म नाशकर प्रभो! आपने, निज गुण प्रकटाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।51।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन दे दो, दर्शन दे दो, दर्शन को आया।
तुमसा दर्शन कहीं मिला ना, अतः चला आया।।
केवलदर्शी के दर्शन में, सब कुछ झलक रहा।
निज पर दर्शन कारक तुमने, केवल दरश लहा।।
कर्म नाशकर प्रभो! आपने, निज गुण प्रकटाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।52।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय का भार उतारा, शुक्ल ध्यान धारा।
निज परिणामों की विशुद्धि से, निज सुख विस्तारा।।
सुख अनंत कैसा है स्वामी! मैं क्या बतलाऊँ?
जैसा सुख तुम भोग रहे हो, वैसा मैं पाऊँ।
कर्म नाशकर प्रभो! आपने, निज गुण प्रकटाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।53।।

ॐ ह्रीं अनंतसुखधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय का अन्त किया तब, बल अनंत पाया।
जिस अनंत बल के बल पर ही, सुख अनंत पाया।।
बल अनंत के धारी प्रभुवर! बल अनंत पाऊँ।
इसलिए संबल पाने प्रभु! तेरे गुण गाऊँ।।
कर्म नाशकर प्रभो! आपने, निज गुण प्रकटाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।54।।

ॐ ह्रीं अनंतबलधारकाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्युपरत क्रिया ध्यान लगाया, परम ध्यान ध्याया।
पाँच ह्स्व अक्षर प्रमाण ही, काल बिता पाया।।
उतने में ही शेष बची सब, कर्म प्रकृति नाशी।
तीर्थराज सम्मेद शिखर से, हुए मुक्ति वासी।।
कर्म नाशकर प्रभो! आपने, निज गुण प्रकटाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।55।।

ॐ ह्रीं सर्वशीलेश्वर–अयोगकेवली–गुणस्थानस्थिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म नशाए प्रभु ने, आठों गुण पाए।
सिद्धालय में जाय विराजे, शाश्वत सुख पाए।।
नित्य निरंजन शुद्ध स्वरूपी, अक्षय अविनाशी।
सिद्ध सिद्धियाँ देने वाले, सिद्धालय वासी।।
कर्म नाशकर प्रभो! आपने, निज गुण प्रकटाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।56।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मनाशक–अष्टगुणधारक–सिद्धस्वरूपाय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

अनंत शक्ति तीर्थंकर में, करती निज कल्याण।
संयम तपश्चरण से श्रावक, प्राप्त करें निर्वाण।।
कर्म नाशकर प्रभो! आपने, निज गुण प्रकटाया।
अतिशयकारी अरनाथ की, पूजा को आया।।57।।

ॐ ह्रीं अनंतचतुष्टयसहिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्यमंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नवागढ़क्षेत्रस्थ–श्रीअरनाथ–जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

अरि रज रहस विहीन हो, अरनाथ भगवान।
जयमाला वर्णन करूँ, गा–गाकर गुणगान।।1।।

भूतल पर आए प्रभो! वरषे रत्न अपार।
भारतभूमि हो गई, रत्नों का भण्डार।।2।।
जन्म हस्तिनापुर हुआ, तीर्थशिखर निर्वाण।
दोनों तीर्थ महान ये, भूतल पर वरदान।।3।।
ज्ञान और वैराग्य धन, सच्चा धन यह जान।
छोड़े चौदह रत्न सब, नव निधियाँ जड़ जान।।4।।
सहस छियानव रानियाँ, रहती थीं रनवास।
उन्हें त्यागकर चल दिए, प्रभो आप वनवास।।5।।
परम दिगम्बर हो गए, मुनिदीक्षा को धार।
चार ज्ञान पाए तभी, जय जय जय जयकार।।6।।
चक्ररत्न को त्यागकर, ध्यान चक्र स्वीकार।
घातिकर्म जेता बने, अरनाथ अविकार।।7।।
केवलज्ञानी आप हो, मैं हूँ प्रज्ञाहीन।
भक्ति प्रेरणा मात्रा से, जिनपूजा में लीन।।8।।
मैं तुममें लवलीन हूँ, तुम निज में लवलीन।
मैं बालक अनभिज्ञ हूँ, तुम सर्वज्ञ प्रवीण।।9।।
वीतराग सर्वज्ञ जिन, हित उपदेशी देव।
ये तीनों गुण आप में, आप हमारे देव।।10।।
पावन गुण पूजा कहें, पूजक श्रद्धावान्।
परम पूज्य प्रभु आप हैं, पूजा फल निर्वाण।।11।।
भक्त हृदय की भक्ति को, स्वीकारो भगवान।
निज प्रसन्नता कीजिए, प्रभुवर मुझे प्रदान।।12।।
बड़ा रही आनंद को, घटा रही दुःख द्वन्द्व।
जिनवर पूजा आपकी, देती परमानंद।।13।।
मिटा रही है पाप को, जुटा रही है पुण्य।
जिनवर पूजा आपकी, अनुपम और अनन्य।।14।।

मुख मण्डल बतला रहा, वीतरागता नाथ।
श्रद्धा से झुक जात है, बार–बार यह माथ।।15।।
जिन मुख रूपी कमल से, निकला जो मकरन्द।
जिस–जिसने भी पी लिया, उसे मिला आनंद।।16।।
सर्वरोग हर जिनवचन, पिया आज जिनदेव।
हुए निरोगी हम अमर, पीकर के स्वयमेव।।17।।
जैन वचन संजीवनी, सर्वोषधि सुखकार।
सदा–सदा ही पीजिए, श्रद्धा गुण को धार।।18।।
निर्विरोध ही चुन लिया, सर्वगुणों ने आय।
समवशरण अध्यक्ष भी, तुमको दिया बनाय।।19।।
नयन कमल बतला रहे, क्रोध रहित हो आप।
अरनाथ भगवान मैं, जपूँ हमेशा जाप।।20।।
धर्म मेघ बरसा दिए, सींच दिए भविवृक्ष।
समवशरण में आप ही, कल्पवृक्ष गुणवृक्ष।।21।।
कल्पवृक्ष सम आप हो, देते हो फलदान।
बिन माँगे छाया मिले, क्यों मांगूँ भगवान।।22।।
पंच महाकल्याण मय, पाँच पाप से दूर।
पंच परम परमेष्ठीमय, निजानंद रसपूर।।23।।
अतिशयकारी आप हो, अरनाथ भगवान।
मैं विधान पूजा करूँ, परम विभव गुणवान्।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीनवागढ़क्षेत्र–स्थित – श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला–पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ जन्म तप ज्ञान शिव, प्राप्त पंचकल्याण।
ज्ञान और वैराग्य दो, करूँ आत्मकल्याण।।
अरि रज रहस विहीन हो, अरनाथ भगवान।
क्षमा दान अब दीजिए, प्रभुवर क्षमा निधान।।

इत्याशीर्वादः

अरनाथ चालीसा

आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

दोहा– परमेष्ठी के पद नमन, करते योग सम्हार।
अरनाथ के चरण में, वन्दन बारम्बार।।

चौपाई

अरनाथ भगवान हमारे, भवि जीवों के तारण हारे।
तीन लोक में मंगलकारी, जो हैं जन–जन के उपकारी।।
उनकी महिमा हम भी गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
स्वर्ग लोक से चयकर आए, नगर हस्तिनापुर शुभ गाए।।
पिता सुदर्शन जी कहलाए, मातश्री मित्रावति पाए।
फाल्गुन सुदी तीज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।।
देव स्वर्ग से चलकर आए, गर्भ कल्याणक श्रेष्ठ मनाए।
रत्नवृष्टि कीन्हें शुभकारी, नगर सजाए अतिशयकारी।।
अष्टकुमारिकाएँ भी आईं, गर्भ का शोधन श्रेष्ठ कराईं।
मंगसिर सुदी चौदस को स्वामी, जन्म लिए मुक्तिपथ गामी।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाये, मेरू गिरि पर न्हवन कराये।
मछली चिन्ह प्रभु पद पाया, अरनाथ तब नाम सुनाया।।
तीस धनुष प्रमाण ऊँचाई, प्रभु ने अपनी देह की पाई।
अस्सी सहस वर्ष की स्वामी, आयु पाए अन्तर्यामी।।
ब्यालिस सहस वर्ष तक भाई, राज्य किए प्रभुजी सुखदायी।
मेघ विनाश देखकर स्वामी, हुई विरक्ति जग से नामी।।
रेवती नक्षत्र श्रेष्ठ सुखदायी, गए सहेतुक वन में भाई।
कुरुवंश के लाल कहाए, स्वर्ण वर्ण का प्रभु तन पाए।।
मंगसिर शुक्ल दशें शुभ जानो, शुभ नक्षत्र में प्रभुजी मानो।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, हुए जहाँ से मुनि अविकारी।।
तृतिय भक्त प्रभु जी कीन्हें, आत्म ध्यान में चित्त जो दीन्हें।
अपराह्नकाल का समय बताया, प्रभु ने संयम को जब पाया।।

एक हजार मुनि शुभकारी, सह दीक्षित थे मंगलकारी।
सोलह दिन का समय बिताया, प्रभु ने संयम को जब पाया।।
एक हजार मुनि शुभकारी, सह दीक्षित थे मंगलकारी।
सोलह दिन का समय बिताया, प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया।।
कार्तिक शुक्ला बारस जानो, अपराह्नकाल समय पहिचानो।
श्रेष्ठ सहेतुक वन शुभ गाया, रेवती नक्षत्र परम पद पाया।।
साढ़े तीन योजन का भाई, समवशरण था मंगलदायी।
आम्र वृक्ष सुरतरु शुभ गाया, कुबेर यक्ष प्रभु का बतलाया।।
यक्षी जया श्रेष्ठ शुभ गाई, गणधर तीस बताए भाई।
कुंभ प्रथम गणधर शुभ जानो, पचास हजार ऋषि पहिचानो।।
छह सो दश थे पूरबधारी, सोलह सो वादी शुभकारी।
अट्ठाइस सौ अवधिज्ञानी, अट्ठाइस सौ केवल ज्ञानी।।
पैंतिस सहस आठ सौ भाई, पैंतिस संख्या शिक्षक गाई।
तैंतालिस सौ विक्रियाधरी, छह हजार आर्यिका शुभकारी।।
साढ़े सत्रह सौ शुभ गाए, विपुल मति ज्ञानी कहलाए।
तीन लाख श्राविकाएँ जानो, एक लाख श्रावक पहिचानो।।
प्रभु सम्मेद शिखर जी आए, एक माह का ध्यान लगाए।
कृष्णा चैत अमावस भाई, रोहिणी नक्षत्र में मुक्ति पाई।।
आप हुए त्रय पद के धारी, कामदेव जिन चक्र के धारी।
जिला ललितपुर में शुभकारी, क्षेत्र नवागढ़ मंगलकारी।।
भू से प्रगट हुए जिन स्वामी, मंगलकारी शिवपद गामी।
उनके दर्शन जो भी पाए, 'विशद' स्वयं सौभाग्य जगाए।।

दोहा

'विशद' भाव से जो पढ़े चालीसा चालीस।
पावे सुख सौभाग्य वह, बने श्री का ईश।।

जाप–**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नवागढ़ क्षेत्रस्थ श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।**

अतिशय क्षेत्र नवागढ़ (ललितपुर)

वंदनाष्टक

– प्रतिष्ठाचार्य पं. पवन 'दीवान' मुरैना

तीर्थों में इक अतिशय तीरथ, नाम नवागढ़ अनुपम नाम।
उत्तर प्रदेश में नगर ललितपुर, स्वयं तीर्थमय अतः प्रणाम।।
महरौनी के ढिंग लघुतीर्थ है, कहें नवागढ़ नावई नाम।
मूलनायक जिन अर हैं भगवन, तीन हाथ तुंग है परमाण।।1।

द्रव्य क्षेत्र युत काल भाव से, जहाँ विशुद्धि आत्म बढ़ै।
वहीं प्रभु का न्हवन पूजन, मंत्र जाप्य से पुण्य बढ़ै।।
पाप पुंज प्रक्षालन होता, धर्मध्यान से हो उत्थान।
जिन बिम्ब दर्शन कहें मनीषी, स्वर्ग मोक्ष के श्रेष्ठ सोपान।।2।

धर्म ध्यान मय भाव विशुद्धि, क्षेत्र वंदना के शुभ भाव।
पहुँच गये मनु तीर्थ धरा पर, अपूर्व शांति हित श्रेष्ठ उपाव।।
तन शुद्धिकर मनशुद्धि से, प्रभुवर छवि को भक्त लखे।
वीतरागता झलक रही है, सौम्य सु मुद्रा प्रभु दिखै।।3।

क्षेत्र इतिहास है बड़ा निराला, सुनो पढ़ो तुम ध्यान लगाय।
धन्य घड़ी जब पुण्योदय हो, मिलता सब कुछ बिना उपाय।।
सन् उनसठ में ''श्री पुष्प जी'' व्यवसाय लक्ष्य ले निकल पड़े।
नावई ग्राम में इमली तरुतल, मनुज एक लख चकित भये।।4।।

खंडित प्रतिमा बहुत रखी थी, नारियल फोड़ा श्रद्धावान।
चर्चा कीनी ज्ञात हुआ है, आशा पूरण यह स्थान।।
इस स्थल की पावन रज से, तन बीमारी होती दूर।
होती मनौती पूर्ण यहाँ पर, सुख शान्ति मिलती भरपूर।।5।।

चर्मचक्षु लख ज्ञान चक्षु से, तभी पुष्प जी किया विचार।
निश्चित इस थल पावन प्रतिमा, प्रकट प्रभु हों जयजयकार।।
इमली तरु को हटा वहाँ से, हुई खुदाई उस ही ढिंग।
प्रकटे प्रभुवर पौने पाँच फुट, ''अर'' भगवान खड़ाजिन बिम्ब।।6।।

किया तभी संकल्प भक्तगण, दस वर्षों का समय लगा।
सन् उन्निस सौ सत्तर हुआ है, जीर्णोद्धार का कार्य भला।।
मूलनायक जिन–शिखर जिनालय गगन चुम्बी है शोभ रहा।
बाहुबली भी यहीं विराजें, धर्मशाला का सृजन हुआ।।7।।

सन् पिच्चासी पंचकल्याणक, गजरथ यात्रा धर्म प्रभाव।
दिन–प्रतिदिन यहाँ प्रगति हुई है, किया समर्पण तन मन चाव।।
पुनः प्रतिष्ठा नव निर्माण की, मंगल सन्निधि श्री सूरि–विशुद्ध।
योगत्रय से मंगल वंदन, जिनवर मुनिवर सुख–समृद्ध।।8।।

अन्तभावना

सदी द्वादश बिम्ब कलायुत, पूरा वैभव श्री शोभित है।
प्रभुवर वंदन नाम मंत्र भी, भक्त भवार्णव सोखत है।।
आओ आओ पुण्य धरा पर, योगत्रय से करो प्रणाम।
'पवन' वरेगी शिवपुर अंगना, सिद्धालय में पूर्ण विराम।। 9।।

।।इत्यलम्।।

आरती

जय अरनाथ भगवान, उतारूँ आरतिया,
उतारूँ आरतिया, निहारूँ मूरतिया।2
करदो जग कल्याण उतारूँ आरतिया।

चक्री काम तीर्थ पदधारी,
दीन दुखी के तुम हितकारी।
दे दो प्रभु वरदान, उतारूँ आरतिया।
जय अरनाथ.....।

अतिशयकारी प्रभु की मूरत,
जो श्रद्धा–भक्ति से पूजत।
होय करम की हान, उतारूँ आरतिया।
जय अरनाथ.....।

देह दीप में संयम बाती,
आतमदृष्टी हमें बनाती।
मेटो मम अज्ञान, उतारूँ आरतिया।
जय अरनाथ.....।

क्षेत्र नवागढ़ है अति प्यारा,
जैन–अजैन सभी दुखहारा।
करते सब गुणगान, उतारूँ आरतिया।
जय अरनाथ.....।

अरनाथ भगवान की आरती

जय अरनाथ देवा, स्वामी अरनाथ देवा,
आरती तेरी आरत हारी, करे करम छेवा।
जय अरनाथ देवा.....।

हस्तिनापुर में जन्म लियो है, जन–जन सुखकारी। 2
राय सुदर्शन मित्रा आंगन, रत्न वृष्टि भारी।।
जय अरनाथ देवा.....।

त्रि पदधारी तुम त्रिपुरारी, दीन दयाल प्रभू। 2
तुव चरणों की सेवा करके, होते विश्व विभू।।
जय अरनाथ देवा.....।

सहेतुक जंगल आम्रवृक्ष तल, प्रभु दीक्षा धारी। 2
चार घातिया कर्म नाशकर, केवल निधि पाई।।
जय अरनाथ देवा.....।

दिव्य देशना जग हितकारी, कुंभ गणी अवधार। 2
नाटक कूट से मोक्ष पधरे, पूजत भवि दुखहार।।
जय अरनाथ देवा.....।

चैत्र अमावस के शुभ दिन में, प्रभु जी प्रगट हुए। 2
अतिशय क्षेत्र नवागढ़, पावन धन्य किए।।
जय अरनाथ देवा.....।

रतन आरती दीप संजोकर, करें आज हर्षाय। 2
तम अज्ञान मिटा दो मेरा, अरज यही जिनराय।।
जय अरनाथ देवा.....।

अरनाथ भगवान की आरती

अरनाथ जिनराज, आज थारी आरती उतारूँ,
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ।
अरनाथ जिनराज.....।

हस्तिनापुर में जन्म लियो है, मित्रा माँ को मोद भयो है,2
धन्य सुदर्शन राय, आज थारी आरती उतारूँ।
अरनाथ जिनराज.....।

तीन पदों के तुम हो धारी, तीन लोक तुम पर बलिहारी,2
कर दो भव से पार, आज थारी आरती उतारूँ।
अरनाथ जिनराज.....।

मेघ पटल लख तुम वैरागे, वैजयंत पालकी विराजे,2
आम्र तरू सौभाग्य, आज थारी आरती उतारूँ।
अरनाथ जिनराज.....।

खडगासन मूरत अतिसुन्दर, जिसको पूजे देव पुरन्दर,2
क्षेत्र नवागढ़ आय, आज थारी आरती उतारूँ।
अरनाथ जिनराज.....।

सब भक्तों का कष्ट मिटाएँ, हम सेवक भी दर पर आये,2
न देर करो महाराज, आज थारी आरती उतारूँ।
अरनाथ जिनराज.....।

जीवन है पानी की बूँद

जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाए रे....ऽऽ
होनी अनहोनी हो-हो, कब क्या घट जाए रे....ऽऽ

रोते-रोते रहे यहाँ, गम को ढोते रहे यहाँ...२
वीराने इस जंगल में, रहे न इक पल मंगल में...२
गम का यहाँ क्यूँ हो-हो, हम बोझ बढ़ाए रे...ऽ

जीवन है पानी की बूँद....

चंद दिनों का जीवन है, इसमें देखो सुख कम है...२
जन्म सभी को है मालूम, मृत्यु किसी को नहीं मालूम...२
जाने कब तन से हो-हो, पंछी उड़ जाए रे...ऽ

जीवन है पानी की बूँद....

संयम तूने लिया नहीं, भोगों को भी तजा नहीं...२
निज शरीर की ममता को, मन से तूने तजा नहीं...२
मोक्ष के पथ पर हो-हो, कैसे कदम बढ़ाए रे...ऽ

जीवन है पानी की बूँद....

शांति प्रभु के चरणों में, माँ जिनवाणी आँचल में...२
पाप को तज पूजा करले, दाग लगे न दामन में...२
तपती दोपहरी हो-हो, सावन बन जाए रे...ऽ

जीवन है पानी की बूँद....

किसको मानें अपना है, अपना भी तो सपना है...२
जिसके लिए माया जोड़ी, क्या वो तेरा अपना है...२
तेरा ही बेटा हो-हो, तुझे आग लगाए रे...ऽ

जीवन है पानी की बूँद....